2023-24

4-31

संस्कृत–विभाग

पीएच. डी. प्रवेश परीक्षा 2021–22

(पाठ्यक्रम)

भाग–1

इकाई 1 शोध की अवधरणा, शोध की प्रकृति एवं व्याप्ति, शोध का महत्त्व, शोध की गुणात्मकता, अनुसंधन एवं समालोचना, शोधर्थी एवं शोध निर्देशक की पात्राता, शोध प्रक्रिया: शोध विषय का निर्धारण, शोध विषय की परिकल्पना, शोध सामग्री का संकलन एवं संयोजन, शोध सामग्री का वर्गीकरण एवं विश्लेषण। (L-12)

इकाई 2 शोध में तथ्यों की खोज और व्याख्या का महत्त्व, शोध प्रपत्रा–विशेषताएँ और प्रारूप, कार्यशाला, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं परिसंवाद का शोध में महत्त्व। शोध प्रबंध लेखन–शोध प्रबंध का रूपबंध, शोध प्रबंध में अध्याय और अनुच्छेद, संदर्भ–लेखन, उद्धरणलेखन, पादटिप्पणी लेखन, शोध प्रबंध की अंतिम रूप रचना। (L-12)

इकाई 3 शोधप्रविधियाँ : वर्णनात्मक/विश्लेषणात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, अन्तरानुशासित पद्धति, क्षेत्रा पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, अनुवाद की भूमिका।
क्षेत्रा सर्वेक्षण : क्षेत्रा सर्वेक्षण की आवश्यकता और उपयोगिता, प्रश्नावली निर्माण, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण। (L-12)

इकाई 4 संस्कृत शोध विषयक सन्दर्भ ग्रन्थ, कोष ग्रन्थ, विश्वकोष, ग्रन्थ सूचियाँ, परिशिष्ट शब्दानुक्रमणिकाएँ, हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों की सूचियाँ, शोध पत्रिकाएँ। (L-12)

भाग–2

इकाई–1

संहिताएँ

निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :

ऋग्वेद–अग्नि (1.1) इन्द्र (2.12) पुरुष (10.90) हिरण्यगर्भ (10.121) नासदीय (10.129) वाक् (10.125)

अथर्ववेद–पृथिवी (12.1)

ब्राह्मण एवं आरण्यक:

सामान्य लक्षण: विशेषताएँ: दर्शपौर्णमास यज्ञ: आख्यान–शुन:शेप तथा वाङ्मनस्, पञ्चमहायज्ञ, व्याकरण एवं वैदिक व्याख्या–पद्धति:

पदपाठ

स्वर–उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित

वैदिक एवं लैकिक संस्कृत में अन्तर

वैदिक व्याख्या–पद्धति प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई –2

विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन। विशेषत: निम्नलिखित उपनिषदों के सन्दर्भ में :

ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय

इकाई –3

वेदांगों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय

निरुक्त (अध्याय 1 और 2)

चार पद – नाम का विचार, आख्यात का विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपातों की कोटियाँ, क्रिया के छ: रूप (षड्भावविकार)

निरुक्त के अध्ययन उद्देश्य

निर्वचन के सिद्धान्त

इकाई – 4

महाभाष्य (पस्पशाह्निक)
शब्द की परिभाषा
शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध
व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य
व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम
व्याकरण पद्धति
सिद्धान्तकौमुदी :
तिङन्त (भू एवं एध् मात्र)
कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया मात्र)
तद्धित (मत्वर्थीय)
कारक प्रकरण
स्त्री प्रत्यय
भाषाविज्ञान:
भाषा की परिभाषा
भाषाओं का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)
संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय ध्वनि–यंत्र
ध्वनि–परिवर्तन के कारण
ध्वनि–नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर)
अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण
वाक्य का लक्षण तथा भेद
भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय
भाषा तथा वाक् में अन्तर
भाषा और बोली में अन्तर

इकाई – 5

व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न
ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका
सदानन्द का वेदान्तसार
लौगाक्षी भास्कर का अर्थसंग्रह

इकाई – 6

रामायण–
रामायण का क्रम
रामायण के आख्यान
रामायणकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए रामायण प्रेरणा–स्रोत
रामायण का साहित्यिक महत्त्व
महाभारत–
महाभारत का क्रम
महाभारत में आख्यान
महाभारतकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत का प्रेरणा–स्त्रोत
महाभारत का साहित्यिक महत्त्व
पुराण–
पुराण की परिभाषा
महापुराण एवं उपपुराण
पौराणिक सृष्टिविज्ञान
पौराणिक आख्यान

इकाई – 7

कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)
मनुस्मृति (प्रथम सर्ग)
पौराणिक सृष्टिविज्ञान
पुराण एवं लौकिक कलाएँ
पौराणिक आख्यान

इकाई – 8

पद्य रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग)
किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग)
शिशुपालवध (प्रथम सर्ग)
नैषधीयचरित (प्रथम सर्ग)

गद्यः

दशकुमारचरितम् (अष्टमोच्छ्वासः)

हर्षचरितम् (पचमोच्छ्वासः)

कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)

काव्यशास्त्रः

काव्यप्रकाश–काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्रविमर्श, रसदोष, काव्यगुण

अलंकार–अनुप्रास, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना

ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)

इकाई – 9

नाट्य–कर्णभार, अभिज्ञानशाकुन्तल, उत्तररामचरित, मुद्राराक्षस, रत्नावली

नाट्यशास्त्र (प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय), दशरूपक (प्रथम, द्वितीय प्रकाश)

इकाई – 10

तर्कसग्रह (दीपिका व्याख्या सहित)